श्री महावीराय नमः

जय गुरु हीरा | श्री कुशलरत्नगजेन्द्रगणिभ्यो नमः | जय गुरु मान

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

रत्नम्

वर्ष–2, अंक–25 | 22 फरवरी, 2017 | जोधपुर (राज.)

हिन्दी पाक्षिक | पृष्ठ–16 | मूल्य 5/– प्रति अंक

RNI No. RAJHIN/2015/66547

साधना

हमें जो भी साधना करनी है जिनरंजन के लिए करनी है जनरंजन के लिए नहीं। साधना के लिए जिनरंजन चाहिये, जनरंजन नहीं। जनरंजन के व्यवहार में साधक–वर्ग में साधना का लक्ष्य गौण हो जाता है, भले ही उनको अनेक भक्त मिल जायें। खयाल रखो, जनरंजन से वाहवाही हो जायेगी, कीर्ति हो जायेगी, लेकिन आत्मोत्थान नहीं होगा। जिनरंजन में आत्मा का कहीं पतन न हो जाए, इसका चिन्तन रहता है।

– नमो पुरिसवरगंधहत्थीणं से साभार

महामंत्री की कलम से

आदरणीय रत्नबन्धुवर,
सादर जय जिनेन्द्र !

देव-गुरु-धर्म के पुण्य प्रताप से आप सपरिवार स्वस्थ एवं प्रसन्न होंगे तथा आपकी आध्यात्मिक, सामाजिक एवं व्यावसायिक गतिविधियाँ निर्बाध रूप से चल रही होंगी।

जिनशासनगौरव, परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर 1008 श्री हीराचन्द्रजी म.सा., महान् अध्यवसायी सरस व्याख्यानी श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. आदि ठाणा 9 पीपाड शहर से जैन भागवती दीक्षा तथा बड़ी दीक्षा उपरान्त कोसाणा पधारे हैं। वहीं परम श्रद्धेय उपाध्यायप्रवर पं. रत्न श्री मानचन्द्रजी म.सा. आदि ठाणा 6 के सामायिक-स्वाध्याय भवन, पावटा, जोधपुर में विराजने से सूर्यनगरी जोधपुर में धर्मध्यान की प्रभावी प्रेरणा हो रही है। मधुरव्याख्यानी श्रद्धेय श्री गौतममुनिजी म.सा. आदि ठाणा 2 जैन भागवती दीक्षा उपरान्त पीपाड़ शहर से विहार कर बीनावास होते हुए पालासनी पधारे हैं। तत्त्वचिन्तक श्रद्धेय श्री प्रमोदमुनिजी म.सा. आदि ठाणा 3 सुख-सातापूर्वक पीपाड़ विराज रहे है। श्रद्धेय श्री मनीषमुनिजी म.सा. आदि ठाणा 2 कोसाणा से विहार कर जोधपुर पधारे तथा आदि ठाणा 3 के साथ पुनः कोसाणा की ओर विहार की संभावना है। आचार्यप्रवर की आज्ञानुवर्तिनी साध्वीप्रमुखा विदुषी महासती श्री तेजकंवरजी म.सा. आदि ठाणा पल्लीवाल क्षेत्र में धर्म की प्रभावना करते हुए जयपुर की ओर विहार कर रहे हैं साथ ही अन्य महासती मण्डल भी विभिन्न क्षेत्रों में धर्मप्रभावना करते हुए विचरणरत है।

जहाँ-जहाँ पर आचार्यप्रवर, उपाध्यायप्रवर, मुनिमण्डल एवं महासती मण्डल का विचरण-विहार चल रहा है, उन क्षेत्रों में रहने वाले गुरुभ्राताओं से निवेदन है कि आप विचरण विहार के दौरान विहार सेवा का लाभ प्राप्त करे एवं महापुरुषों से आवश्यक मार्गदर्शन एवं प्रेरणा प्राप्त करावें। संघ एवं संघ की सहयोगी संस्थाओं द्वारा संचालित गतिविधियों में सक्रियता के साथ भाग लें। ऐसा विनम्र निवेदन है। आप सभी के सकारात्मक सुझाव अपेक्षित है।

8-9 फरवरी, 2017 के दिवस रत्नसंघ में स्वर्णिम पृष्ठों में अंकित हुए है। रत्नसंघ के इतिहास में प्रथम बार पिता-पुत्र की एक साथ दीक्षा सम्पन्न हुई। हमारे राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष डॉ. अशोकजी कवाड़ एवं कवाड़ परिवार का अकूत धन-वैभव, पद-प्रतिष्ठा होते हुए भी सभी कुछ त्याग कर संयम मार्ग की ओर अग्रसर होना सभी को प्रेरित कर गया। अभिनन्दन समारोह में उनकी अभिव्यक्ति संघ सदस्यों को जागृत कर गई। मुमुक्षु श्री कल्पेशजी कवाड़, श्रीमती उजासजी डाकलिया तथा सुश्री मधुबालाजी कवाड़ के हृदयोद्गार दिल को छू गये। महापुरुषों ने जो संयम की महिमा का वर्णन किया, वह सच में साकार होता दृष्टिगत हुआ। आप हम सब संघ-उन्नयन में सजगता-जागरुकता बनाये रखें, इसी मंगल मनीषा के साथ.....

पूरणराज अबानी
संघ महामंत्री

विचरण–विहार स्थिति

(दिनांक 22.02.2017 की स्थिति)

☆ परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा 9 कोसाणा (राज.)
☆ परमश्रद्धेय उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा 5 पावटा, जोधपुर
☆ मधुरव्याख्यानी श्रद्धेय श्री गौतममुनि जी म.सा. आदि ठाणा 2 पालासनी (राज.)
☆ तत्त्वचिन्तक श्रद्धेय श्री प्रमोदमुनि जी म.सा. आदि ठाणा 3 पीपाड़ शहर
☆ श्रद्धेय श्री मनीषमुनि जी म.सा. आदि ठाणा 3 बनाड़
☆ साध्वीप्रमुखा विदुषी महासती श्री तेजकंवरजी म.सा. आदि ठाणा 11 बासखो रेलवे स्टेशन (राज.)
☆ तत्त्वचिन्तिका महासती श्री रतनकंवर जी म.सा. आदि ठाणा 7 सिद्धान्तशाला, पावटा, जोधपुर
☆ विदुषी महासती श्री सुशीलाकंवरजी म.सा. आदि ठाणा 5 पुष्कर रोड, अजमेर
☆ विदुषी महासती श्री सौभाग्यवतीजी म.सा. आदि ठाणा 18 जय भवन, पीपाड़
☆ व्याख्यात्री महासती श्री मनोहरकंवरजी म.सा. आदि ठाणा 3 जामोला (राज.)
☆ व्याख्यात्री महासती श्री सोहनकंवरजी म.सा. आदि ठाणा 4 गंगापुर सिटी
☆ व्याख्यात्री महासती श्री सरलेशप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा 3 पालासनी (राज.)
☆ व्याख्यात्री महासती श्री इन्दुबालाजी म.सा. आदि ठाणा 6 बोदवड़ (महा.)
☆ व्याख्यात्री महासती श्री विमलावती म.सा. आदि ठाणा 3 महुआ (राज.)
☆ व्याख्यात्री महासती श्री निःशल्यवतीजी म.सा. आदि ठाणा 5 शिमोग्गा (कर्ना.)
☆ व्याख्यात्री महासती श्री मुक्तिप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा 4 गोहाना (हरि.)
☆ व्याख्यात्री महासती श्री सुमतिप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा 4 जलगांव (महा.)
☆ व्याख्यात्री महासती श्री विमलेशप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा 7 बारसी (महा.)
☆ व्याख्यात्री महासती श्री विनितप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा 3 कोसाणा
☆ व्याख्यात्री महासती श्री रुचिताजी म.सा. आदि ठाणा 6 वापी (गुज.)
☆ व्याख्यात्री महासती श्री निष्ठाप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा 6 कोसाणा

सभी संत-सती मण्डल के रत्नत्रय की साधना में सहायक स्वास्थ्य में समाधि है तथा विचरण विहार सुख-शांति पूर्वक चल रहा है।

फाल्गुनी चौमासी की स्वीकृति कोसाणा तथा आदिनाथ जन्म–कल्याणक के अवसर पर रणसीगांव विराजने की स्वीकृति

परम श्रद्धेय आचार्य प्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के फाल्गुनी चातुर्मास दिनांक 12 मार्च 2017 को कोसाणा विराजने की स्वीकृति से कोसाणा संघ हर्षित एवं प्रमुदित है। आचार्यप्रवर बड़ी दीक्षा के उपरान्त पीपाड़ शहर से विहार कर साथिन होते हुए कोसाणा पधारे है। आचार्यप्रवर के कोसाणा विराजने से सामायिक-स्वाध्याय,

त्याग-तप आराधना का ठाट लगा हुआ है। कोसाणा संघ के पदाधिकारियों ने संघ-सदस्यों से निवेदन किया कि इस अवसर पर अधिक से अधिक संख्या में त्याग-तप एवं धर्माराधना का लाभ लें।

आचार्यप्रवर ने आगामी 21 मार्च 2017 को आदिनाथ जन्म-कल्याणक के अवसर पर रणसीगांव विराजने की स्वीकृति फरमाई है। उसी दिन हमारे आराध्य गुरुदेव संघनायक परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. का 79वाँ जन्म-दिवस का पावन प्रसंग भी उपस्थित हो रहा है। इस पावन दिवस पर हम सभी सामायिक-स्वाध्याय, त्याग-तप एवं धर्माराधना के साथ गुरु के प्रति सच्ची श्रद्धा की अभिव्यक्ति करें, ऐसा विनम्र निवेदन है। **19 मार्च 2017 को आगामी कतिपय चातुर्मास खुलने की संभावना है।**

अक्षय तृतीया हेतु गोटन संघ को स्वीकृति

परम श्रद्धेय आचार्य प्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा. ने 31 जनवरी, 2017 को पीपाड़शहर में दान एवं तप दिवस रूप अक्षय तृतीया 29 अप्रेल, 2017 पर गोटन विराजने की साधु मर्यादा में रखने योग्य आगारों के साथ स्वीकृति प्रदान की है, जिससे गोटन संघ हर्षित एवं प्रमुदित है। इस अवसर पर एकान्तर तप करने वाले एवं नवीन त्याग-प्रत्याख्यान ग्रहण करने वाले तप-साधक आचार्यप्रवर, मुनिमण्डल एवं महासती मण्डल के माध्यम से दान एवं तप के माहात्मय को श्रवण कर सकेंगे। तप-साधक इस अवसर अपने पधारने की स्वीकृति नाम एवं सदस्य संख्या का उल्लेख करते हुए सूचना संघ के प्रधान कार्यालय घोड़ों के चौक, जोधपुर, ईमेल- absjrhssangh@gmail.com, फोन- (0291) 2636763 / 2641445 पर अथवा गोटन संघ के सम्पर्क सूत्र पर भिजवाने का श्रम करावें। गोटन के सम्पर्क सूत्र-श्री हंसराजजी चौपड़ा-अध्यक्ष, हस्ती किराणा स्टोर, मेन मार्केट, पोस्ट- गोटन-342902 (जिला-नागौर), मोबाइल-94602-85067, श्री ओमप्रकाशजी ओस्तवाल-मंत्री, महावीर ऑटोमोबाइल्स, पोस्ट-गोटन-342902 (जिला-नागौर), मोबाइल-94685-48048

पुण्यधरा पीपाड़ का फिर भाग्य जगा,
गुरु चरणों में फिर नव इतिहास रचा

पीपाड़ शहर में दीक्षा महोत्सव सानन्द सम्पन्न

चहुं ओर दिखी संयम की ललक, शोभायात्रा की ऐसी थी झलक

पुण्यधरा पीपाड़ में चार-चार मुमुक्षुओं की जैन भागवती दीक्षा महोत्सव का आगाज 8 फरवरी 2017 को प्रातः 10.30 बजे शोभायात्रा से हुआ। दीक्षा महोत्सव की अनुमोदना का लाभ प्राप्त करने हेतु देशभर के अनेक स्थानों से श्रावक-श्राविकाएं, आबाल वृद्ध पीपाड़ शहर पहुंच चुके थे। 8 फरवरी भोर से ही पीपाड़ एवं आसपास ग्राम-नगरों से भी श्रद्धालुओं की भीड़ उमड़ रही थी। मुमुक्षु डॉ. अशोक जी कवाड़, श्री कल्पेश जी कवाड़, श्रीमती उजास जी डाकलिया एवं सुश्री मधु जी कवाड़ परिजनों के साथ अपने-अपने निवास स्थान से स्थानक में आचार्यप्रवर के सान्निध्य में पहुंचे तथा

मांगलिक प्राप्त की। संयम मार्ग पर अग्रसर होने हेतु तत्पर मुमुक्षुओं के चेहरे पर अपूर्व प्रसन्नता के भाव देखकर उपस्थित जन समूह भाव-विभोर हो रहा था। मुणोत स्वाध्याय भवन से प्रारम्भ हुई शोभायात्रा में सर्वप्रथम सुव्यवस्थित बैण्ड वादकों की ध्वनियां चारों ओर स्वर-सुमन बिखेर रही थी। उसके पश्चात् मुमुक्षु डॉ. अशोक जी कवाड़ तथा मुमुक्षु श्री कल्पेश जी कवाड़ हाथ जोड़ कर सभी का अभिवादन कर रहे थे। पुरुष वर्ग अधिकांशतः सफेद गणवेश में दीक्षा के नारों को गुंजायमान करते हुए कतारबद्ध चल रहे थे। उनके बाद भजन मण्डली संयम-भावना से ओतप्रोत भजनों के माध्यम से पीपाड़ नगरी को भक्ति के रस में सराबोर कर रही थी। तत्पश्चात् दोनों मुमुक्षु बहिनें श्रीमती उजास जी डाकलिया तथा सुश्री मधुबाला जी कवाड़ जनसमूह का हाथ जोड़ कर अभिवादन करते हुए शोभायमान हो रही थी। अन्त में महिलाएं चून्दड़ी साड़ी में तथा बालिकाएं एक-सी वेशभूषा में व्यवस्थित चलते हुए संयम-महिमा के गीत गाते हुए चल रही थी। विभिन्न स्थानों पर मुमुक्षु भाई-बहिनों का स्वागत किया गया। शोभायात्रा पीपाड़ शहर के प्रमुख स्थलों से होती हुई मुमुक्षु अशोक जी कवाड़ के निवास स्थान पर सम्पन्न हुई।

संयम–पथ की दृढ़ इच्छाशक्ति, प्रभावित कर गई मुमुक्षुओं की अभिव्यक्ति

श्री ओसवाल लोड़े साजन विकास केन्द्र (कोट) के विशाल प्रांगण में दोपहर 1 बजे से ही आगन्तुक अपने स्थान पर विराजने लगे। दोपहर 2.30 बजे वीर परिवार एवं दीक्षार्थी भाई-बहिनों का अभिनन्दन समारोह प्रारम्भ हुआ। सर्वप्रथम मंच संचालन करते हुए श्री सुमतिचन्द जी मेहता तथा नमन जी मेहता ने समारोह के मुख्य अतिथि राजस्थान सरकार के गृहमंत्री माननीय श्री गुलाबचन्द जी कटारिया, विशिष्ट अतिथि सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग के निदेशक माननीय श्री रवि जी जैन, सम्माननीय अतिथि अलवर जिला एवं सत्र न्यायाधीश श्री हेमन्त कुमार जी जैन, पीपाड़ शहर विधायक श्री गर्ग साहब, पीपाड़ नगर पालिका अध्यक्ष श्री महेन्द्र सिंह जी कच्छवाहा सहित संघ के महत्त्वपूर्ण पदाधिकारियों को मंच पर आमंत्रित किया। दीक्षार्थी भाई-बहिन भी जय-जयकारों के बीच मंच पर आसीन हुए। मंगलाचरण के पश्चात् पधारे हुए सभी अतिथिजनों का संघ द्वारा माल्यार्पण, शॉल तथा स्मृति चिह्न प्रदान कर सम्मान किया गया।

संघ सेवा शिरोमणी माननीय श्रीमान् मोफतराजजी मुणोत ने स्वागत भाषण प्रस्तुत करते हुए कहा कि सर्वप्रथम मैं पीपाड़ की धरा को प्रणाम करता हूँ, जिस धरा ने आचार्य हस्ती, आचार्य हीरा को प्रदान किया। आज तक गुरु हीरा के शासन में 91 दीक्षाएँ हो चुकी हैं। चार कल होने वाली है। इसी पीपाड़ में पिता और पुत्र की साथ में दीक्षा, एक परिवार से तीन दीक्षा, संघ के राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष की दीक्षा, पीपाड़ की दीक्षा, ये हम सब के लिए गौरव की बात है। श्री कटारिया साहब गृहमंत्री तो है ही, साथ ही श्रद्धाशील श्रावकरत्न भी है। श्री रविजी जैन, होनहार आई.ए.एस. अफसर है, पीपाड़ के भानजे है, इनका भी स्वागत है। भाई हेमन्तकुमारजी जैन का भी स्वागत है। श्री महेन्द्रसिंहजी कच्छवाहा जिन्होंने दीक्षा आयोजन में महती भूमिका निभायी,

उनका भी हार्दिक स्वागत है। मुमुक्षु भाई अशोक जी कवाड़, जो विगत 15 वर्षों से संघ-सेवा में कार्यरत रहे हैं। कल्पेशजी भी पिताजी के पद्चिह्नों पर चल रहे हैं। कवाड़ परिवार आचार्य भगवन्त की सेवा में सर्वतोभावेन समर्पित रहा है। सुश्राविका श्रीमती उषाजी कवाड़ को भी मैं नमन करता हूँ, जिन्होंने पति और पुत्र को रत्नसंघ में सहर्ष समर्पित कर वीरता का परिचय दिया है। श्रीमती उजासजी डाकलिया की दीक्षा कराने में श्री सुमतिचन्दजी मेहता का भी बड़ा योगदान रहा है। मधुजी कवाड़ की तो क्या बात करें इन्हीं के कारण ही पीपाड़ में दीक्षा होने जा रही है। संघ के पूर्व पाँचों अध्यक्षों का भी हार्दिक स्वागत है। आदरणीय रतनलालजी बाफना साहब को रत्नसंघ विभूषण से सम्मानित किया जा रहा है, उनका भी हार्दिक स्वागत करता हूँ। सभी वीर परिवारों का, सुदूर एवं नजदीक से पधारे सभी श्रद्धालु श्रावक-श्राविकाओं का भी हार्दिक स्वागत है।

स्वागत भाषण के पश्चात् वीर परिवारों का अभिनन्दन किया गया। वीर पिता एवं वीर दादा श्री दलीचन्द जी कवाड़, वीर श्वसुर जी श्री पानमल जी दुग्गड़, वीर पिता श्री प्रेमचन्द जी कवाड़, वीर पुत्र श्री रौनक जी डाकलिया का संघ द्वारा माला एवं शॉल से अभिनन्दन किया गया। साथ ही वीर दादी एवं वीर माता श्रीमती अमरावबाई जी कवाड़, वीर धर्मपत्नी श्रीमती उषाबाई जी कवाड़, वीर सासूजी श्रीमती राजकुमारी जी दुग्गड़, वीर माता श्रीमती ललिताबाई जी कवाड़, वीर पुत्रवधू श्रीमती रेखा जी डाकलिया का संघ द्वारा माला एवं चून्दड़ी से अभिनन्दन किया गया। सभी वीर परिवारों को संघ की ओर से रजत पट्टिका प्रदान की गई।

अभिनन्दन समारोह के अन्तर्गत शासन सेवा समिति के संयोजक आदरणीय श्रीमान् रतनलाल जी बाफना को संघ-दीप्ति में अतुलनीय एवं अमूल्य योगदान हेतु ''रत्नसंघ विभूषण'' सम्मान से अलंकृत किया गया। उक्त सम्मान हेतु आदरणीय बाफना साहब को अतिथिगणों ने माला, शॉल, अभिनन्दन पत्र के साथ ही रजत पट्टिका प्रदान की। आदरणीय बाफना साहब ने अपने उद्गार प्रकट करते हुए कहा कि संघ ने मुझे बहुत प्रेम दिया, सम्मान दिया। आज जो अभिनन्दन किया, उसके लिए संघ के प्रति हार्दिक आभार एवं कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ। मुमुक्षु बन्धुओं के प्रति हार्दिक आभार एवं नमन करता हूँ।

अभिनन्दन समारोह के सम्माननीय अतिथि श्री हेमन्तजी जैन ने अपने उद्बोधन में फरमाया कि अभिनन्दन का यह समारोह मुमुक्षु आत्माओं के लिए है। जिस प्रकार दीपक स्वयं आलोकित होकर जन-जन को प्रकाशित करता है, वैसे ही जैन संत स्व-कल्याण के साथ जन-जन के कल्याण में निरत रहते हैं। वे पाँच महाव्रतों का कठोरता से पालन करते हैं। आज के इस सुविधा भोगी युग में इनका त्याग, महान् त्याग है। विरले महापुरुष ही संयम की राह पर चल पाते हैं। ऐसे मुमुक्षु आत्माओं की मैं हार्दिक अनुमोदना करते हुए उन्हें नमन करता हूँ। संत परम्पराओं में जैन परम्परा के सन्तों का अपना उत्कृष्ट स्थान है। जिस तरह समुद्र में प्रकाश स्तम्भ मार्गदर्शक बनते हैं, उसी प्रकार जैन संत एवं सतियाँ भी मार्गदर्शक बनते हैं। अन्त में चारों मुमुक्षु आत्माओं को वन्दन करता हूँ। इनके वीर परिवार को भी नमन करता हूँ।

समारोह में अपनी भावाभिव्यक्ति प्रस्तुत करते हुए मुमुक्षु अशोक जी कवाड़ की वीर धर्मपत्नी श्रीमती उषाजी कवाड़ ने फरमाया कि कल 09 फरवरी है। कल की 09 फरवरी मेरे जीवन में विशेष है। मेरा पुत्र कल जगत् पुत्र बन जायेगा। जिससे सारी महिलाएँ उसकी माताएँ बन जायेंगी। अब तक वह मेरे पास रहा था, अब वह गुरु हीरा के पास रहेगा। मैंने ऐसे सुन्दर कार्य किएँ, जिससे मुझे कल्पेश की माता बनने का सौभाग्य मिला। कल्पेश तुम संत बनकर सिद्ध बनोगे, मैं तो संत-सतियों की सेवा करके वहाँ तक पहुँच जाऊँगी। मधुजी मेरी ननद है, सब ननद के तो एक बार पैर छूते हैं, पर इनको तो प्रतिदिन तीन-तीन बार वन्दना करेंगे। मेरे साथ में पूरा कवाड़ परिवार, दुग्गड़ परिवार, रत्नसंघ परिवार है, इसलिए मैंने श्रावकजी (अशोकजी) को आज्ञा दी है। आप सब का प्रेम बना रहे, यही मंगल मनीषा है। कल्पेश तुम ऐसी साधना करना कि दुबारा जन्म नहीं लेना पड़े। अब किसी और माँ को मत रूलाना। कल्पेश तुम्हारा ध्यान रखने के लिए पापा है। पापा का ध्यान रखने के लिए तुम हो। तुम दोनों का ध्यान रखने के लिए गुरुदेव है।

मुमुक्षु श्रीमती उजासबाई जी डाकलिया के वीर सुपुत्र श्री रौनकजी डाकलिया ने अपनी भावना व्यक्त करते हुए कहा कि ''माता ने मेरा पालन किया, अब छह काय की माता बनने जा रही है।'' संयम मार्ग पर दृढ़तापूर्वक निरन्तर आगे बढ़ते हुए अपने लक्ष्य को प्राप्त करे, यही मंगल भावना है।

मुख्य अतिथि महोदय श्री गुलाबचन्दजी कटारिया ने अपने उद्बोधन में फरमाया कि आप और हम सब भाग्यशाली है, जहाँ दीक्षार्थी भाई और बहिनों का अभिनन्दन करने का सौभाग्य प्राप्त हो रहा है। पुण्य का उदय तो मेरा हुआ, जो आज मैं यहाँ उपस्थित हुआ। कुछ ऐसे अवसर होते हैं जो अन्तकरण में सोचने को बाध्य कर देते हैं। जीवन में बदलाव गुरु कृपा से ही बनता है। लोहे को भी पारस बनाने की शक्ति गुरु के पास है। वीर परिवार की वीरता को मैं प्रणाम करता हूँ। उनका सम्मान करता हूँ। मैंने 72 वर्ष की उम्र में बहुत-सी दीक्षाएँ देखी, किन्तु ऐसा उदाहरण मैं प्रथम बार देख रहा हूँ। वह माँ कितनी सौभाग्यशाली है जो अपने दिल के टुकड़े को तथा अपने सौभाग्य को जिनशासन में समर्पित कर रही है। दीक्षार्थी भाई-बहिनों ने जिस संकल्प को स्वीकार किया है, उस संकल्प को मैं प्रणाम करता हूँ। आचार्य हीरा तो ऐसे पॉवर हाउस है, जिनका स्पर्श करते ही ऊर्जा मिलती है, अतः मैं उनके चरण स्पर्श करने की सदैव भावना रखता हूँ।

समारोह के विशिष्ट अतिथि डॉ. रविजी जैन (आई.ए.एस.) ने फरमाया कि इस पावन प्रसंग पर आकर मुझे अपूर्व प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है। जैन धर्म में जन्म लेने के कारण ही आज के इस अवसर पर मैं पुलकित हूँ। चारों मुमुक्षु भाई-बहिनों को नमन करता हूँ। संघ को भी नमन करता हूँ।

अतिथियों के उद्बोधन के पश्चात् मुमुक्षु भाई-बहिनों को अपने उद्गार रखने हेतु आमंत्रित किया गया। सर्वप्रथम मुमुक्षु डॉ. अशोक जी कवाड़ ने अपनी भावाभिव्यक्ति में कहा कि भाग्य से वैराग्य आता है। सौभाग्य से गुरु हीरा मिलते हैं।

परम सौभाग्य से जिनशासन में पंचम पद को पाने का अवसर मिलता है। संयम के बिना ये आत्मा पवित्र होती नहीं। संयम ही ऐसा पथ है, जहाँ निष्पाप जीवन जीया जाता है।

जब जीवन में थोड़ी-सी निष्पापता भी हमारे भय को भगा देती है तो सम्पूर्ण जीवन को निष्पाप बनाने वाले पंचम पद का तो कहना ही क्या? उस पंचम पद को मैं वन्दन करता हूँ। पूर्व भव की उत्कृष्ट पुण्याई से हमें जिनशासन मिला है। महासतीजी के प्रवचन से प्रेरणा मिली की अगले भव में तुम्हारा क्या होगा? मेरी माताजी ने फरमाया कि जब मैं गर्भ में था, जब माताजी संत-सतियों को सुपात्र दान भावनापूर्वक देती। पूज्य पिताजी के अनन्त उपकार है, दादासा दानवीर थे, दादीसा ज्ञानवान, क्रियावान् श्राविकारत्न थी। पूरे परिवार का इतना प्रेम, इतनी आत्मीयता रही। कल मेरा आश्रवरूपी जीवन का समापन है तथा संवर-निर्जरारूप संयम जीवन का जन्म है।मुझे श्राविकाजी का पूरा सहयोग मिला, उनका जितना उपकार मानूँ उतना ही कम है। संघ के प्रत्येक सदस्य का मैं आभारी हूँ, जिन्होंने मुझमें योग्यता न होते हुए भी यहाँ तक बढ़ाया। आप सब पूर्व के सम्बन्धों को भुलाकर मुझे आध्यात्मिक साधना में आगे बढ़ने हेतु अम्मा-पियरो का विरुद निभाना, मेरा मार्गदर्शन करना, यही विनम्र निवेदन है।

मुमुक्षु श्री कल्पेशजी कवाड़ ने अपनी भावाभिव्यक्ति में कहा कि संसार असार है, संयम में सार है। चाहे संन्यास कहो, चाहे दीक्षा कहो, चाहे अनगार कहो, अभिप्राय एक ही है। परिवर्तन संसार है, संसार परिवर्तन ही है। क्षणिक परिवर्तन- पानी से बर्फ बनना तथा विकास यात्रा का परिवर्तन- दूध से दही बनना है। संयम में उत्कृष्ट पुरुषार्थ करे तो उसी भव में, मध्यम पुरुषार्थ होने पर तीन भव, जघन्य पुरुषार्थ करें तो 15 भव में तो मोक्ष हो ही जाता है। परिवर्तन की यात्रा में मेरा वेश परिवर्तन न हो अपितु भाव परिवर्तन हो। आज तक जो भी जाने-अनजाने में गलतियाँ हुई उनसे छुटकारा पाने का मौका मिला है। कौन कहते हैं प्रभुवर दूर गये, मुझे मेरे ही भीतर में उतर गये। प्रभु को अपने भीतर में कैसे बिठाऊँ। ऐसा सोचने पर ज्ञात हुआ कि गुरु भगवन्तों की असीम कृपा से ही होगा। मेरा त्याग कवाड़ परिवार का त्याग नहीं किन्तु सर्व संग (आसक्ति) का त्याग है। साधना पथ पर बढ़ते हुए यदि मेरे कदम विपरीत चलने लगे तो आप मुझे चेताते रहना, यही मेरी विनती है। अब मुझे- क- करुणावान, ल- लगनशील, पे- पवित्र, श- शीलवान बनना है। कवाड़ परिवार का त्याग कर मैं आचार्य हीरा के परिवार का सदस्य बनने जा रहा हूँ। गुरु के उपकारों को मैं दो पंक्तियों में अभिव्यक्त करना चाहता हूँ:- ''गुरु के चरण तले, मुक्ति का सुख है मिले। जो कुछ भी पाया तुमसे ही पाया, अर्पण है तेरे लिए।।'' तीनों मुमुक्षुओं के प्रति मेरी हार्दिक मनोभावना:- ''संयम की महिमा क्या है, जीकर के दिखा देना। दुनिया गाये यश तेरा, इतिहास बना देना।।''

मुमुक्षु बहिन उजासजी डाकलिया ने अपने हृदयोद्गार व्यक्त करते हुए कहा कि आचार्य भगवन्त को कोटिशः वन्दन। आचार्य भगवन्त की अनन्त कृपा रही, उसी कारण मैं संयम-पथ पर आगे बढ़ रही हूँ। बचपन में भी संयम की भावना थी, किन्तु कर्मोदय के वश नहीं ले सकी। इस प्रकार पचपन आ गया। 01 जनवरी को गुरु

भगवन्त के चरणों में पहुँची। मुझे दीक्षा लेनी है। गुरु भगवन्तों ने महती कृपा की। परिवार वालों ने भी मुझे खूब सहयोग दिया। आप सबसे हार्दिक क्षमायाचना करती हूँ।

मुमुक्षु बहिन मधुबालाजी कवाड़ ने अपनी सुमधुर वाणी में संयम की महिमा का बखान करते हुए फरमाया कि समय रहते समय में रमण कर ले, इसमें समझदारी है। समय रहते सिद्धान्त रूपी संयम में आत्मारूपी समय को रमण कराना चाहती हूँ? जिनशासन की प्राप्ति अनन्त पुण्य का परिणाम है। जिनशासन में, अच्छे धर्म में, अच्छे परिवार में जन्म लेने के बाद भी संयम न लूँ तो क्या करूँ। माता-पिता, दादा-दादाजी ने गुरु हस्ती-गुरु हीरा के दर्शन कराये। मेरे पापा को तो आचार्य भगवन्त के जीवन में भगवान नजर आते हैं। मैं संयम लेना चाहती हूँ पर यह अधूरा सत्य है, किन्तु पूर्ण सत्य यही है कि मैं संयम को जीना चाहती हूँ। एक पल भी मैं असंयम में नहीं रहना चाहती। अब मेरी हर रात, हर बात, हर प्रभात संयम के साथ होगी। अब मैं ज्ञान की लक्ष्मी बनना चाहती हूँ। कर्मों को परास्त करने वाली रानी बनना चाहती हूँ। चन्दनबाला और मृगावती के समान समता और सहनशीलता की परिभाषा बनना चाहती हूँ। मैं मधु से मृगावती बनने का पूरा प्रयास करूँगी। संघ के प्रत्येक सदस्य के प्रति आभार ज्ञापित करना चाहती हूँ। जिनके उत्साह को देखकर हमारा उत्साह संयम में बढ़ रहा है। मेरे माता-पिता के प्रति तो मैं नत-मस्तक हूँ, जिन्होंने एक बार ही गुरुदेव के कहते ही आज्ञा दे दी। मेरी मम्मी ने कभी भी मुझे संयम के लिये नहीं रोका, उनका अनन्त-अनन्त आभार। साधना से मुझे सिद्धि पद प्राप्त हो जाये, यही मनोभावना है।

मुमुक्षुओं एवं वीर परिवार के हृद्योद्गार सुनकर मंचासीन अतिथि, पदाधिकारी गण सहित उपस्थित जन समूह की आंखों से अश्रुधारा बहने लगी। तत्पश्चात् अभिनन्दन पत्र का वाचन कर सभी मुमुक्षुओं को अभिनन्दन पत्र प्रदत्त किये गये। संघ महामंत्री श्री पूरणराज जी अबानी ने पीपाड़ संघ सहित सभी का धन्यवाद एवं आभार ज्ञापित किया।

चारों तरफ दीक्षार्थियों का जयकारा
चारित्रात्माओं ने संयम पथ स्वीकारा

9 फरवरी 2017 का पावन दिवस, चारों मुमुक्षु बन्धु संयम पथ पर अग्रसर होने के लिए हर्षित थे। मुमुक्षुओं में पीपाड़ मूल निवासी कवाड़ परिवार के तीन सदस्य थे, तो एक बहिन पीपाड़ में जन्मी डाकलिया परिवार में विवाहित थी। अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष डॉ. अशोक जी कवाड़ (सुपुत्र श्री दलीचंद जी कवाड़), कल्पेश जी कवाड़ (सुपुत्र डॉ. अशोक जी कवाड़) पिता-पुत्र ने एक साथ दीक्षा लेकर नया इतिहास बनाया वहीं दो बहिनों में उजासजी डाकलिया (धर्मपत्नी स्व. श्री शांतीलाल जी डाकलिया) तथा मधुबाला जी कवाड़ (सुपुत्री श्री प्रेमचंद जी कवाड़) ने भी पावन प्रव्रज्या अंगीकार की।

प्रातः 9 बजे चारों मुमुक्षु भाई-बहिनों की अभिनिष्क्रमण यात्रा अपने-अपने निवास स्थान से प्रारम्भ हुई। चारों मुमुक्षु भाई-बहिनों ने दीक्षा स्थल पर परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. से मांगलिक श्रवण कर वेश-परिवर्तन हेतु निर्धारित

स्थलों की ओर प्रस्थान किया।

दीक्षा-महोत्सव कार्यक्रम में आगमज्ञ, प्रवचन-प्रभाकर, व्यसन मुक्ति के प्रबल प्रेरक, जिनशासन गौरव आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म. सा. महान् अध्यवसायी श्रद्धेय श्री महेन्द्र मुनि जी म.सा. आदि ठाणा 14 पाट पर शोभायमान हो रहे थे, वहीं विदुषी महासती श्री सौभाग्यवती जी म.सा., व्याख्यात्री महासती सरलेशप्रभा जी म.सा., व्याख्यात्री महासती ज्ञानलता जी म.सा. आदि ठाणा 28 पाट के समीप जमीन पर विराज रही थी। सामने वीर परिवार और उनके पीछे हजारों श्रावक-श्राविकाओं की विशाल उपस्थिति अत्यंत मनभावन लग रही थी।

वेश परिवर्तन के पश्चात् जय-जयकार की जयध्वनि के साथ जैसे ही दीक्षार्थी भाई-बहिन अपने पारिवारिक-परिजनों और संघ पदाधिकारियां के साथ दीक्षा स्थल ओसवाल लोडे साजन विकास केन्द्र (कोट) के विशाल प्रांगण में पहुंचे, हजारों की संख्या में दीक्षा-महोत्सव की अनुमोदना में आए देश के हर भाग के श्रद्धालुओं ने दीक्षार्थियों के आगमन पर हाथ जोड़कर प्रणाम करते हुए नारों के जयनाद में स्वर मिलाते हुए जयनाद किया। भगवान महावीर स्वामी की जय, आचार्य भगवंत पूज्य श्री हस्तीमल जी म.सा. की जय, आचार्य प्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. की जय, उपाध्याय प्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. की जय, साध्वीप्रमुखा विदुषी महासती श्री तेजकंवर जी म.सा. की जय, निर्ग्रंथ संत-मुनिराजों की जय, महासतीवृंद की जय जैसे जयघोष कोट के चारों ओर स्वप्रेरित भावना से जन-जन के मुंह से उच्चरित हो रहे थे। धन्य है चारित्रात्माओं को जो संसार की मोह-माया, घर-परिवार और आरम्भ-परिग्रह को त्याग कर शाश्वत सुख की प्राप्ति में संयम स्वीकार कर रहे हैं।

चारों चारित्रात्माओं ने आचार्य प्रवर प्रभृति संत-सतीवृंद को विधिवत् वंदन किया। दीक्षा पूर्व संयम की महता पर संत-सतियों के हृदयोदगार चल रहे थे। प्रवचन का शुभारंभ श्री यशवंत मुनि जी म.सा. ने किया। महासती श्री भाग्यप्रभा जी म.सा., महासती श्री विनीतप्रभा जी म.सा., व्याख्यात्री महासती श्री सरलेश प्रभा जी म.सा., विदुषी महासती श्री सौभाग्यवती जी म.सा. ने संक्षेप में संयम जीवन की महत्ता बतलाई। श्रद्धेय श्री मनीष मुनि जी म.सा., श्रद्धेय श्री योगेश मुनि म.सा., तत्त्वचिंतक श्रद्धेय श्री प्रमोद मुनि जी म.सा., मधुरव्याख्यानी श्रद्धेय श्री गौतम मुनि जी म.सा. ने गद्य, पद्य भाषा-भाव में पुण्य भूमि पीपाड़ में पिता-पुत्र सहित चार-चार मुमुक्षु आत्माओं का रत्नसंघ और जिन शासन में समर्पित होने को पीपाड़ की पुण्यवानी, आचार्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. का अतिशय और दीक्षार्थी भाई-बहिनों तथा उनके पारिवारिक परिजनों की शुभ-भावना बताते हुए संयम का माहात्म्य समझाया।

दीक्षार्थी भाई-बहिनों के वन्दन के चलते महान् अध्यवसायी श्री महेन्द्र मुनि जी म.सा. ने संक्षेप में अपनी भावना के साथ जोधपुर विराजित उपाध्याय प्रवर की ओर से आया शुभकामना-पत्र पढ़कर सुनाया। मुनिश्री ने श्रमण संघीय उपाध्याय रमेशमुनि जी म.सा. एवं रत्नसंघीय महासतीवृंद जो सुदूर प्रदेशों में विचरण कर रहे हैं, उनके पत्रों के भाव भी रखे।

आचार्य प्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. की ओर से दीक्षा-पाठ दिए जाने

के पूर्व विरक्त-विरक्ताओं ने अपने माता-पिता और पारिवारिक परिजनों के चरण-स्पर्श कर आशीर्वाद लिया। हजारों की संख्या में उपस्थित जनमेदिनी को हाथ जोड़कर अपनी ओर से हुई भूलों के लिए विशुद्ध हृदय से क्षमायाचना की। जन समुदाय ने हाथ जोड़कर क्षमायाचना की भावना जाहिर की। क्षमा मांगने और क्षमा देने का दृश्य अनूठा था।

आचार्य प्रवर ने पीपाड़ सकल जैन संघ और अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के पदाधिकारियों की अनुज्ञा चाही तो संघ संरक्षक मंडल के संयोजक श्री मोफ्तराज जी मुणोत, संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री पी. शिखरमल जी सुराणा, राष्ट्रीय महामंत्री श्री पूरणराज जी अबानी, पीपाड़ श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के अध्यक्ष-मंत्री सहित संघ के पदाधिकारियों ने खड़े होकर आज्ञा प्रदान की। आचार्य प्रवर ने संघ पदाधिकारियों एवं परिवारजनों की आज्ञा-अनुमति प्राप्त कर उपस्थित जन समुदाय को सम्बोधित करते हुए कहा कि आपने मंत्र-जाप से जहरीले जानवरों के जहर उतरते देखे हैं। असमय में वर्षा की बात भी आपने देखी भले ही ना हो, सुनी जरूर होगी। मैं आज एक ऐसा मंत्र देकर इन दीक्षार्थियों को संयम-जीवन में प्रवेश करा रहा हूं, जिससे ये नर से नारायण, जीव से शिव और संसार सागर से तिरकर शाश्वत सुख प्राप्त कर सकते हैं। आप दूर-दूर तक मेरी बात भले ही ना सुन पा रहे हों, लेकिन शांत बैठकर दीक्षा-विधि देख सकते हैं। आप सुन सकें तो सुनें, लेकिन देखकर भी अन्तर्मन में त्याग के प्रति भावना जगाएं।

आचार्य प्रवर ने नमस्कार महामंत्र, इच्छाकारेण (आलोचना पाठ) तस्सउत्तरी (कायोत्सर्ग-सूत्र) दीक्षार्थियों को सुनाया। चारों मुमुक्षुओं ने गुरु आदेश पर पहली बार इच्छाकारेणं तथा दूसरी बार लोगस्स का ध्यान किया। ध्यान के अनन्तर लोगस्स-पाठ के उच्चारण में संघनायक के साथ संत-मुनिराजों का समवेत स्वर संयुक्त हो जाने से एक-एक शब्द अपने आप में जन-जन के मन को खींचने वाला बन गया।

आचार्य प्रवर ने 'करेमि भंते' के पाठ से तीन करण-तीन योग से प्रतिज्ञा-सूत्र पाठ पढ़ाया, तो समुदाय ने जय-जयकार के गगनभेदी जयनाद कर अपनी प्रसन्नता व्यक्त की, वहीं मन ही मन कवाड़ और डाकलिया परिवार की शासन-दीप्ति में शुभ भावना पर अन्तर्मन से अनुमोदना प्रकट की। प्रतिज्ञा सूत्र पूरा होते ही, संत-मुनिराजों ने नवदीक्षित दोनों संतों को आचार्य प्रवर के आजू-बाजू बिठाया तो नवदीक्षिता महासतीद्वय को महासतीवृंद ने अपने पास आगे स्थान उपलब्ध करवाया।

दीक्षा के बाद जनमेदिनी अपेक्षा कर रही थी कि आचार्य प्रवर अपने हृदयोद्गार व्यक्त करेंगे, लेकिन ध्यान-मौन का समय हो जाने के चलते आचार्य प्रवर ने मंगलपाठ सुनाया और जनसमुदाय से कहा कि आप दूर से ही वन्दन कर लें, नजदीक आकर चरण-स्पर्श का प्रयास नहीं करें। मांगलिक श्रवण कर जन-समुदाय के मुंह से जय-जयकार के जयनाद तो चले ही, नवदीक्षित संत-सतियों के नाम की जय ध्वनि भी कर्णगोचर हुई। कोट में और कोट के बाहर स्थानक और बाजार तक जिधर देखो सभी जगह जनसमूह परस्पर बातों ही बातों में यह कहते सुना गया कि

आचार्यप्रवर के अतिशय प्रभाव से मौसम तो अनुकूल रहा, अपूर्व शान्ति भी बनी रही।

दीक्षा के पश्चात् हजारों लोगों की सुव्यवस्थित भोजन-व्यवस्था कोट में रखी गई। सुरुचिपूर्ण व्यंजनों के साथ आत्मीयता-अपनत्व के क्षणों में सभी ने भोजन का आनन्द प्राप्त किया। पीपाड़ शहर के कार्यकर्ताओं के साथ ही अन्य ग्राम-नगरों के सेवाभावी युवक-युवतियों ने भोजन व्यवस्था में अपना सहयोग प्रदान किया।

दीक्षा समारोह में प्रत्येक भक्त के चेहरे पर हर्ष था। हर व्यक्ति पुण्यधरा पीपाड़ और हस्ती-हीरा की जननी जन्मभूमि की सराहना करते और सुनते देखा गया। पीपाड़ में चार मुमुक्षु आत्माओं का संयम मार्ग में आगे बढ़कर संयम स्वीकार करने का नजारा अद्भुत था।

बड़ी दीक्षा सम्पन्न

9 फरवरी को दीक्षित चारों नव दीक्षार्थी संत-सतीयों की बड़ी दीक्षा 15 फरवरी 2017 को सम्पन्न हुई। इस अवसर पर आचार्यश्री ने नवदीक्षित साधु-साध्वियों से कहा- आप धर्म-मार्ग में कर्त्तव्य करते चलें, पर जब तक शरीर है तब तक इस शरीर का कोइ-न-कोई नाम होगा ही। नाम भी आगे बढ़ने में सहायक होता है। आचार्यश्री ने नवदीक्षित संत-सतियों को नए नाम प्रदान किए, जो इस प्रकार हैं-

नवदीक्षित साधु–साध्वियों का बड़ी दीक्षा के पश्चात् नामकरण

	दीक्षा पूर्व नाम	नया नाम
1.	श्री अशोक जी कवाड़	नवदीक्षित श्री अशोकमुनिजी म.सा.
2.	श्री कल्पेशजी कवाड़	नवदीक्षित श्री कल्पेशमुनिजी म.सा.
3.	श्रीमती उज्जासजी डाकलिया	नवदीक्षिता महासती श्री कल्पयशाजी म.सा.
4.	सुश्री मधुबालाजी कवाड़	नवदीक्षिता महासती श्री मधुश्रीजी म.सा.

आचार्यश्री ने नवदीक्षित संत-सतियों से अपेक्षा रखी कि नाम के अनुसार आप गुणों में, कर्त्तव्य पालन में प्रदत्त नामों को सार्थक करें।

जलगांव में मुमुक्षु सुश्री हिमांशी जी कांकरिया की दीक्षा सम्पन्न

श्री वर्द्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ, जलगांव एवं श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, जलगांव के तत्त्वावधान में नागौर निवासी वीर पिता श्री भंवरलाल जी कांकरिया की सुपुत्री मुमुक्षु बहिन सुश्री हिमांशी जी कांकरिया की जैन भागवती दीक्षा महोत्सव का कार्यक्रम जलगांव में सानन्द सम्पन्न हुआ। जलगांव में 30 जनवरी से 6 फरवरी तक अष्टदिवसीय कार्यक्रम तैयार किया गया। सभी कार्यक्रमों में श्री जैन रत्न युवक परिषद्, नवयुवक मण्डल, आनन्द ग्रुप आदि अनेकों मण्डलों ने अपना बहुमूल्य योगदान दिया। दीक्षा गीत, मेहंदी गीत, भजन नाटिका, प्रश्नमंच के कार्यक्रम प्रतिदिन दोपहर 2 से 4 चलें, जिसमें हजारों की संख्या में उपस्थिति रही।

5 फरवरी को मुमुक्षु बहिन की शोभायात्रा का सुव्यवस्थित संचालन हुआ। शोभायात्रा में हजारों श्रावक-श्राविकाओं की उपस्थिति रही। आर.सी. बाफना शोरूम,

सुभाष चौक से प्रातः 8.30 बजे प्रारम्भ हुई शोभायात्रा विभिन्न मार्गों से होती हुई रतनलाल सी. बाफना स्वाध्याय भवन पहुंची।

दोपहर 2 बजे वीर परिवार एवं मुमुक्षु बहिन का अभिनन्दन समारोह आयोजित हुआ। समारोह में संघ संरक्षक मण्डल के संयोजक, संघ सेवा शिरोमणी श्री मोफतराज जी मुणोत-मुम्बई, अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री पी. शिखरमल जी सुराणा-चेन्नई, सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के अध्यक्ष श्री पारसचन्द जी हीरावत-मुम्बई, शासन सेवा समिति सह संयोजक श्री कैलाशचन्द जी हीरावत-जयपुर, संघ संरक्षक श्री सुमेरसिंह जी बोथरा-जयपुर, सहित संघ के गणमान्य पदाधिकारी उपस्थित हुए। जलगांव एवं आस-पास के क्षेत्रों के आबाल-वृद्ध सभी ने हजारों की संख्या में उपस्थित होकर कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई। अभिनन्दन समारोह के पश्चात् रक्षा-बंधन का कार्यक्रम तथा सायंकाल भजनों के साथ ही नाटिका का कार्यक्रम भी आयोजित हुआ।

परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. की आज्ञा से व्याख्यात्री महासती श्री इन्दुबाला जी म.सा. के मुखारविन्द से 6 फरवरी, 2017 को मुमुक्षु बहिन सुश्री हिमांशी जी कांकरिया की जैन भागवती दीक्षा सम्पन्न हुई। प्रवचन सभा में महासती श्री मुदितप्रभा जी म.सा. ने संयम का माहात्म्य प्रस्तुत किया। प्रातः 10 बजे वीर परिवार के अस्थायी निवास से प्रारम्भ होकर अभिनिष्क्रमण यात्रा दीक्षा स्थल पहुंची। अपार जनसमूह के बीच व्याख्यात्री महासती श्री इन्दुबाला जी म.सा. ने मुमुक्षु बहिन को दोपहर 11.30 बजे दीक्षा पाठ प्रदान किया। दीक्षा पाठ के पश्चात् उपस्थित जनमेदिनी ने जय-जयकारों के साथ नवदीक्षित महासती के नाम का भी जयनाद किया।

13 फरवरी 2017 को एमआईडीसी, जलगांव में नवदीक्षिता महासती जी की बड़ी दीक्षा भी हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न हुई। महासती श्री मुदितप्रभा जी म.सा. ने दशवैकालिक सूत्र के चारों अध्ययन को सुन्दर तरीके से समझाया। बड़ी दीक्षा के अवसर पर संघ संरक्षक श्री सुरेशदादा जैन, श्री ईश्वरबाबुजी ललवाणी, शासन सेवा समिति के संयोजक श्री रतनलाल जी बाफना, रत्नसंघ पूर्व अध्यक्ष श्री ज्ञानेन्द्र जी बाफना-जोधपुर, श्री देवीचन्द जी छोरिया, श्री दलीचन्द जी चोरडिया सहित गणमान्य महानुभाव उपस्थित थे। बड़ी दीक्षा उपरान्त नवदीक्षिता महासती जी का आचार्यप्रवर द्वारा प्रदत्त नाम महासती श्री हेमप्रभा जी म.सा. घोषित किया गया।

आचार्य हस्ती–स्मृति–सम्मान 2017 तथा संघ द्वारा प्रदत्त अन्य सम्मान हेतु प्रविष्टियाँ आमन्त्रित

आचार्य हस्ती–स्मृति सम्मान

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, जोधपुर द्वारा प्रतिवर्ष जैन आगम, जैन धर्म-दर्शन, कला एवं संस्कृति तथा जैन जीवन-पद्धति के क्षेत्र में लेखन, शोध तथा जैन सिद्धान्तों के प्रचार-प्रसार में विशिष्ट योगदान करने वाले विशिष्ट विद्वान् को 'आचार्य हस्ती-स्मृति-सम्मान' से सम्मानित किया जाता है। इस सम्मान हेतु

लेखकों से सम्मान योग्य कृति की चार प्रतियाँ 30 जून 2017 से पूर्व तक आमन्त्रित हैं। उक्त तिथि के पश्चात् प्राप्त प्रविष्टियाँ सम्मिलित नहीं की जाएगी। सम्मान हेतु नियम इस प्रकार हैं-

1. विद्वान् की एक कृति अथवा उनके सम्पूर्ण योगदान के आधार पर भी सम्मानित किया जा सकेगा।
2. सम्मान हेतु प्रकाशित अथवा अप्रकाशित (टंकित) कृति की चार प्रतियाँ प्रेषित की जानी चाहिए।
3. प्रकाशित कृति सन् 2013 से पूर्व की नहीं होनी चाहिए।
4. अन्य संस्थाओं द्वारा पूर्व में पुरस्कृत कृति पर यह सम्मान नहीं दिया जाएगा।
5. कृति का विशेषज्ञ विद्वानों से मूल्यांकन कराया जाएगा।
6. कृति के मौलिक एवं पूर्व में पुरस्कृत न होने का प्रमाण-पत्र संलग्न करना होगा।
7. सम्मान के रूप में 51 हजार की राशि प्रशस्ति-पत्र के साथ प्रदान की जाती है।

आवदेन-पत्र कृति की चार प्रतियों के साथ अपने बायोडेटा एवं सम्पर्क सूत्र सहित संघ कार्यालय के पते पर प्रेषित करें।

युवा प्रतिभा– शोध साधना–सेवा–सम्मान (45 वर्ष की आयु तक)–

1. प्रशासनिक चयन- राज्यस्तरीय व केन्द्रीय प्रशासनिक सेवा, न्यायाधिपति आदि विशिष्ट पदों पर चयन।
2. प्रोफेशनल विशिष्ट- डॉक्टर, इंजीनियर, चार्टर्ड एकाउण्टेण्ट, कम्पनी सचिव व अन्य प्रोफेशनल कोर्स में योग्यता सूची में स्थान पाने पर।
3. शोध- वैज्ञानिक खोज (अहिंसा व जैन सिद्धान्तों को पुष्ट करने वाली)
4. संघ-सेवा- चतुर्विध संघ सेवा, विशेष धार्मिक अध्ययन, धार्मिक लेखन इत्यादि।

विशिष्ट स्वाध्यायी सम्मान (एक श्राविका, एक युवा, एक वरिष्ठ स्वाध्यायी)- कम से कम 10 वर्ष स्वाध्याय संघ, जोधपुर से स्वाध्यायी (पर्युषण पर्वाराधन) के रूप में सक्रिय सेवा। (युवा स्वाध्यायी के लिए आवश्यक होने पर सेवा वर्ष में छूट दी जा सकेगी।)

गुणी–अभिनन्दन–

1. तपस्या- कम से कम पाँच वर्ष तक एकान्तर, दीर्घ तपस्या, दीर्घ संवर-साधना या अन्य विशिष्ट तप।
2. अन्य- सेवा, साधना, संघ उन्नयन में योगदान, चतुर्विध संघ-सेवा, विद्वान्।

न्यायमूर्ति श्री श्रीकृष्णमल लोढ़ा स्मृति युवा शिक्षा प्रतिभा सम्मान

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, जोधपुर संघ-संरक्षक न्यायमूर्ति श्री श्रीकृष्णमल लोढ़ा की स्मृति में उनकी धर्मपत्नी स्व. श्रीमती उगमकंवरजी लोढ़ा की पावन प्रेरणा से संघ द्वारा प्रदत्त युवा शिक्षा-प्रतिभा सम्मान हेतु प्रविष्टियाँ आमन्त्रित हैं। इसके अन्तर्गत उन छात्र-छात्राओं की प्रविष्टियाँ स्वीकार की जायेंगी, जिन्होंने शिक्षा के क्षेत्र में विशिष्ट उपलब्धि प्राप्त की हो। माध्यमिक शिक्षा

बोर्ड, विश्वविद्यालय आदि की परीक्षाओं में वरीयता सूची में विशिष्ट स्थान प्राप्त करने वाले श्रेष्ठ छात्र को 21 हजार रुपये की राशि से सम्मानित किया जाएगा। प्रतियोगी एवं प्रोफेशनल पाठ्यक्रमों में उच्च वरीयता प्राप्त छात्र-छात्रा को भी सम्मानित किया जा सकता है।

इच्छुक अभ्यर्थी आवेदन करते समय अंकतालिका की सत्यापित प्रतिलिपि संलग्न करें।

डॉ. बिमला भण्डारी जैन रत्न शोध सम्मान

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल की पूर्व महामंत्री डॉ. बिमला जी भण्डारी की पुण्य स्मृति में अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के तत्त्वावधान में भण्डारी परिवार की ओर से जैन धर्म-दर्शन से सम्बद्ध विषय पर पी-एच्. डी एवं डी.लिट् उपाधि प्राप्त करने वाले शोधकर्त्ताओं को 'डॉ. बिमला भण्डारी जैन रत्न शोध सम्मान' से सम्मानित किया जाएगा। इस हेतु आवश्यक बिन्दु इस प्रकार हैं-

1. जिन शोधकर्त्ताओं ने 18 फरवरी 2016 से 17 फरवरी 2017 की अवधि में पी-एच्. डी/डी.लिट् उपाधि प्राप्त की है, उनमें से 5 पी-एच्.डी. उपाधिधारकों तथा 2 डी. लिट् उपाधिधारकों को क्रमशः 11 हजार रुपये एवं 15 हजार रुपये की प्रोत्साहन राशि से सम्मानित किया जाएगा।
2. 18 फरवरी 2016 से 17 फरवरी 2017 के मध्य जो भी पी-एच्.डी. एवं डी.लिट् उपाधि प्राप्तकर्त्ता होंगे, वे इस सम्मान हेतु आवेदन कर सकते हैं। आवेदन-पत्र के साथ पी-एच्.डी./डी. लिट् उपाधि के समुचित सर्टिफिकेट एवं शोधकार्य का सारांश संलग्न करना होगा।
3. प्राप्त आवेदन-पत्रों का निर्णायक समिति द्वारा मूल्यांकन कर सम्मान हेतु अनुशंसा की जाएगी।
4. सम्मान राशि 'श्री सरदारमल भण्डारी चेरिटेबल ट्रस्ट, जयपुर' के सौजन्य से प्रदान की जाएगी।

उक्त सभी सम्मानों हेतु अपनी प्रविष्टियां संघ के निम्नांकित पते पर संबंधित सम्मान का नाम लिखते हुए 10 अगस्त 2017 से पूर्व प्रेषित करें।

-पूरणराज अबानी, महामंत्री, अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, घोड़ों का चौक, जोधपुर-342001 (राज.), फोन नं. 0291-2636763

हीरा प्रवचन पीयूष भाग–5 का विमोचन

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर द्वारा प्रकाशित ''हीरा प्रवचन पीयूष'' भाग-5 का विमोचन पीपाड़ दीक्षा अभिनन्दन समारोह में मुख्य अतिथि श्री गुलाबचन्दजी कटारिया-गृहमंत्री, राजस्थान सरकार के कर कमलो द्वारा हुआ। इस पुस्तक में जिनशासन गौरव परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर 1008 श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के प्रवचनों का संकलन है, जो जिज्ञासु पाठकों के लिये पठनीय है। इस पुस्तक का संकलन एवं सम्पादन श्री नौरत्नमल जी मेहता-जोधपुर ने किया। इस कार्य में उन्हें श्री सौभाग्यमलजी जैन-अलीगढ़ एवं सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के पूर्व कार्याध्यक्ष एवं

परामर्शदाता श्री सम्पतराज जी चौधरी-दिल्ली का पूर्ण सहयोग प्राप्त हुआ। सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल की ओर से आप सभी की महनीय सेवाओं के लिए हार्दिक धन्यवाद। इस पुस्तक का मूल्य 30/- रुपये मात्र रखा गया है। इच्छुक पाठक पुस्तक मंगवाने हेतु मण्डल कार्यालय, जयपुर से सम्पर्क करें:- सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, बापू बाजार, जयपुर-302003 (राज.), फोन:- 0141-2575997

आगम अध्येता प्रतियोगिता परीक्षार्थियों हेतु निवेदन

उत्तराध्ययनसूत्र भाग-3 का परिणाम सभी प्रतिभागियों के मोबाईल पर भेजा गया है। परीक्षा का पारितोषिक उत्तराध्ययनसूत्र के तीनों भागों को मिलाकर परिणाम निकालकर भिजवाया जायेगा। प्रतिभागियों का पारितोषिक प्रतिभागी के बैंक खाते में ही प्रेषित किया जायेगा।

अतः प्रतियोगिता के प्रत्येक प्रतिभागी अपना नाम, स्थान का उल्लेख करने के साथ निम्न जानकारी भिजवाने का श्रम करावें :- **Name of Bank, Name of Account holder, Bank Account Number, Bank Place, Bake IFS code, Micr Code, Mobile No., E-mail shravikamandal@yahoo.com**

-बीना मेहता-महासचिव

श्री कुशल जैन छात्रावास जोधपुर में प्रवेश ले

सूर्यनगरी जोधपुर में श्री कुशल जैन छात्रावास का सफल संचालन विगत कई वर्षों से किया जा रहा है, जिसमें सैकण्डरी, हायर सैकण्डरी एवं कॉलेज स्तर के छात्र-छात्राओं के ठहरने एवं भोजन की उत्तम व्यवस्था है। छात्रावास में प्रवेश लेने वाले छात्र को 2500 रुपये मात्र में आवास-निवास एवं भोजन की व्यवस्था प्रदान की जाती है। प्रवेश के इच्छुक छात्र निम्नांकित पदाधिकारियों से सम्पर्क कर सकते हैं:-

1. मूलचन्द बाफना, ट्रस्टी- 9461549178
2. भागचन्द कांकरिया, ट्रस्टी-9829027379
3. सुगनचन्द छाजेड़, संयोजक-7568421744

छात्रावास का पता- श्री कुशल जैन छात्रावास, प्लॉट नं. 30, प्रथम पोलो, पावटा, जोधपुर-342006 (राज.), फोन नं. 0291-2546713

आगामी पर्व

फाल्गुन कृष्णा 14	शनिवार	25.02.2017	चतुर्दशी एवं पक्खी
फाल्गुन शुक्ला 8	रविवार	05.03.2017	अष्टमी
फाल्गुन शुक्ला 14	शनिवार	11.03.2017	चतुर्दशी
फाल्गुन शुक्ला 15	रविवार	12.03.2017	फाल्गुनी चौमासी (चातुर्मासिक पर्व)
चैत्र कृष्णा 8	मंगलवार	21.03.2017	भगवान आदिनाथ जन्म-कल्याणक एवं आचार्य प्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. का 79 वां जन्मदिवस
चैत्र कृष्णा 14	सोमवार	27.03.2017	चतुर्दशी एवं पक्खी